Course – B.A.-2HINDI

Semester-4

Paper Code-HINCC 408

Paper Name - पाश्चात्य काव्य शास्त्र

Topic-थॉमस इलियट का मूर्त–विधान (वस्तुनिष्ठ सह संबंध)

Faculty Member Name-Dr.Deepa Srivastava

E-Mail-deepsri24@gmail.com

Good morning everyone! ईलियट के वस्तुनिष्ठ सह संबंध पर सामग्री भेज रही हूँ। पूरा नाम. . . Thomas Stearns Eliot..# 26.09.1888-04.01.1965 # बीसवीं शताब्दी के महान कवि # 1948 में साहित्य का Noble Prize # रचनाएँ. . . . Tradition and Individual Talent, Selected Essays, On Poetry and Poet etc.

ईलियट की मान्यता है कि भाव संप्रेषण के लिए वस्तुनिष्ठ सह संबंध आवश्यक है।उनके इस वस्तुनिष्ठ समीकरण को विभाव विधान कहा जा सकताहै।विभावों का चयन इस रूप में किया जाए कि सामाजिक के चित्त मेँ लेखक के मानस भाव जाग्रत हो जाए।
अमूर्त भावों, संवेगों, विचारों एवं अनुभूतियों के संप्रेषण हेतु कवि को ऐसी वस्तुस्थिति एवं घटना का विन्यास करना चाहिए जिससे उसके भाव वस्तुओं में समाहित हो कर पाठक के हृदय में उसी भाव को जाग्रत कर सके।
कवि अपने भावों के मूर्तिकरण के प्रति जितना सजग और सक्षम होगा ,संप्रेषण मेँ उसे उतनी ही सफलता प्राप्त होगी।
अपनी संवेदनाओं और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति के लिए कवि मूर्त विधान से अमूर्त को मूर्त रूप देता है।परिणाम स्वरूप इन प्रतीकों से श्रोता या पाठक के मन मेँ ठीक वही भावनाएँ जाग्रत होती हैं, जो कवि के मन में जाग्रत हुई थीं।काव्य की सफलता इसी में है कि भावनाओं और उनके मूर्त विधान में पूर्ण सामंजस्य तथा एकरूपता हो।
काव्य रचना के क्षेत्र मेँ यह अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्धांत है।
उदाहरण. . . . . हृदय की कोमलता के लिए मोम और मक्खन का प्रयोग।

.....डाक्टर दीपा श्रीवास्तव